कविता में निम्नमध्यवर्गीय जीवन का बयान

कैसा असह्य, कितना जर्जर
यह मध्यवर्ग का निचला स्तर !

नागार्जुन (1911 ई.) की अधिकांश कविताएँ भारतीय मध्यवर्ग के इसी निचले स्तर अर्थात् निम्नमध्यवर्गीय जीवन को चित्रित करती हैं। उनकी कविता के वे अंश विशेष रूप से रेखांकित करने योग्य हैं जिनमें वे मामूली, उपेक्षित, असहाय जिन्दगी का चित्र प्रस्तुत करते हैं। वानगी के लिए इस प्रकार के कुछ चित्र नीचे प्रस्तुत हैं—

छोटे-छोटे मोती-जैसे दाँतों की किरणें बिखेर कर
नील कमल की कलियों जैसी आँखों में भर
अनुनय सादर
पहले; पीछे शासक की तर्जनी उठाकर
इंगित करती; नहीं तुम्हें मैं जाने दूँगी
चार साल की चपल-चतुर वह बहरी-गूँगी
कितनी सुन्दर, नयनाभिराम
उस लड़की का है जया नाम

× × ×

फटी दरी पर बैठा है चिर-रोगी बेटा
राशन के चावल से कंकड़ बीन रही पत्नी बेचारी
गर्भ भार से अलस शिथिल है अंग-अंग,
मुँह पर उसके मटमैली आभा
छप्पर पर बैठी है बिल्ली
किसके घर से जाने क्या कुछ खा आयी है
चला चलाकर जीभ स्वाद लेती होंठों का

× × ×

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

बड़ा है आगे को बेतरह पेट
धँसी-धँसी आँखें
फूले फूले गाल
टाँगें हैं कि तीलियाँ, अटपटी चाल
दो छोटी, एक बड़ी
लगी हैं अँगलियाँ पीछे की ओर
मवाद, मिट्टी, पसीना और वक्त—
चार-चार दुश्मनों की खाये हुए मार
निकर मना रहा मुक्ति की गुहार
आँत की मरोड़ छुड़ा न पायीं बरगद की फलियाँ
खड़ा है नयी पौध पीपल के नीचे खाद की खोज में
देख रहा ऊपर
कि फलियाँ गिरेंगीं
पेट भरेगा
और फिर जाकर
सो रहेगा चुपचाप झोपड़े के अन्दर
भूखी माँ के पेट से सट कर[1]

ऊपर उद्धृत काव्य-चित्रों में पहला एक बहरी-गूंगी लड़की का है। दूसरा चित्र एक गरीब गर्भवती माँ और उसके रोगी बेटे का है। तीसरा चित्र उस नयी पौध का है जो आज भी भूखा है और जिसे अपनी भूख मिटाने के लिए बरगद की फलियाँ बीनना पड़ता है। नागार्जुन द्वारा प्रस्तुत ये चित्र इतने वास्तविक और सजीव हैं कि इन्हें विना देखे नहीं प्रस्तुत किया जा सकता। नागार्जुन की कविता में इस प्रकार के अनेक चित्र मिलेंगे। 'देखना ओ गंगा मइया' शीर्षक कविता में वे मल्लाहों के नंग-धड़ंग छोकरों का चित्रण करते हैं जो उथली-छिछली धार में पैसे खोज रहे हैं। वे उन पैसों से बीड़ी पियेंगे। आम चूसेंगे। देह में साबुन की सुगन्धित टिकिया मलेंगे। सर में चमेली का तेल लगायेंगे। हम-उम्र छोकरी के लिए टिकली लायेंगे। कितनी सीमित हैं उनकी इच्छाएँ। अर्थशास्त्री शायद इसी को उनकी आवश्यक आवश्यकता कहें। नागार्जुन ने फटी बिवाइयोंवाले खुरदुरे पैरों, गुट्ठल घट्ठोंवाले कुलिश-कठोर पैरों, ठूँठ बाँहों, बीड़ी का धुआँ उगलते नाकहीन चेहरों, धँसी हुई आँखों, माचिस की तीली जैसी टाँगों, रोग से फूले हुए पेटों—तात्पर्य यह कि ग्रामीण उपेक्षित मनुष्य के सम्पूर्ण रूप को बहुत नजदीक से देखा है। देखा नहीं खुद भोगा है। 'रवि ठाकुर' शीर्षक कविता में नागार्जुन उनके वैभवपूर्ण आभिजात्य से अपनी अभावग्रस्त जिन्दगी की तुलना करते हुए लिखते हैं—

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पैदा हुआ था मैं
दीन हीन अपठित किसी कृषक कुल में
... ...
मेरा क्षुद्र व्यक्तित्व
रुद्ध है सीमित है—
आटा-दाल-नमक-लकड़ी के जुगाड़ में !
पत्नी और पुत्र में !
सेठ के हुकुम में !
कलम ही मेरा हल है कुदाल है ! !
बहुत बुरा हाल है ! !

नागार्जुन ने अपनी कविता में इसी अभावग्रस्त जिन्दगी का चित्रण किया है। भूख की पीड़ा उनकी कविता में बार-बार व्यक्त हुई है। 'प्रेत का बयान' शीर्षक कविता एक भूख से मरनेवाले अध्यापक का बयान है। नागार्जुन अपनी कविता में उन शोषक शक्तियों का विरोध करते हैं जो निम्नमध्यवर्ग की जिन्दगी की फटेहाली के कारण हैं। वे पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, सम्प्रदायवाद आदि का विरोध करते हैं—

हाँ बापू, निष्ठापूर्वक मैं शपथ आज लेता हूँ
हिटलर के ये पुत्र-पौत्र जब तक निर्मूल न होंगे
हिन्दू-मुसलिम-सिख फासिस्टों से न हमारी
मातृभूमि यह जब तक खाली होगी—
सम्प्रदायवादी दैत्यों के विकट खोह
जब तक खँडहर न बनेंगे
तब तक मैं इनके खिलाफ लिखता जाऊँगा

'विजयी के वंशधर' शीर्षक कविता में नागार्जुन उन बाबुओं-मालिकानों पर व्यंग्य करते हैं जो छप्पन प्रकार के पकवान उड़ाते हैं। 'तो फिर क्या हुआ' शीर्षक कविता में वे उन बुद्धिजीवियों पर व्यंग्य करते हैं जिन्हें केवल अपनी कुर्सी और अपने वेतन से मतलब होता है। समूचा गाँव नदी के पेट में चला गया है। हजारों लोग बेघर हो गये हैं। मगर ये बुद्धिजीवी कॉफ़ी या ओवल्टीन या नीबू का शर्बत पीकर गोल्डफ्लैक से धुएँ के छल्ले छोड़ते हुए 'स्टेट्समैन' की खबरों में डूब जाते हैं। 'कवि' शीर्षक कविता में नागार्जुन उन कवियों पर व्यंग्य करते हैं जिनका गला मीठा है। जो रेडियो के लिए गीत लिखते हैं। जो एज़रापाउण्ड और ईलियट को पढ़ते हैं और बाकी सबको ईडियट समझते हैं। 'जयति नखरंजनी' शीर्षक कविता में वे उन आधुनिकाओं का मजाक उड़ाते हैं जो सज-सँवरकर चमक-दमक के साथ एक मतदान-केन्द्र पर जाती हैं पर उँगली में काला निशान लगने के डर से बिना वोट दिये घर लौट आती हैं। नागार्जुन उन दैवी शक्तियों के प्रति भी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विरोध व्यक्त करते हैं जो मनुष्य को दबाती हैं। 'उद्‌बोधन' शीर्षक कविता में विन्ध्याचल पर्वत को सम्बोधित करते हुए वे लिखते हैं—

विनयावनत हुए तुम जिनको देख
और, जो गये तुमको चटपट टाप
वह अगस्त्य थे सचमुच कितने धूर्त

तात्पर्य यह कि नागार्जुन अपनी कविता में उस अभिजात मानसिकता का विरोध करते हैं जो मामूली आदमी की उपेक्षा करती है। इसी अर्थ में वे कवि की पक्षधरता का समर्थन करते हैं—

इतर साधारणजनों से अलहदा होकर रहो मत
कलाधर या रचयिता होना नहीं पर्याप्त है
पक्षधर की भूमिका धारण करो···

नागार्जुन अपनी काव्य-मान्यताओं में विशुद्ध कलावाद का विरोध करते हैं तथा कला की सोद्देश्यता को स्वीकार करते हैं—

हाय रे दैव ! हाय भगवान
शब्द को दिया क्यों अर्थ का दान
ध्वनि ही ध्वनि देते, देते मात्र लय-तान
भावों की दलदल में आकण्ठमग्न काव्य कला
त्राहि त्राहि कर रही, उद्धार करो उसका
× × ×
यथासमय मुकुलित हों
यथासमय पुष्पित हों
यथासमय फल दें
आम और जामुन, लीची और कटहल !
तो फिर मैं ही बाँझ रहूँ !
मैं ही न दे पाऊँ—
परिणत प्रज्ञा का अपना फल !

जाहिर है नागार्जुन की कविता में कला की अलंकृति नहीं मिलेगी। उसमें सपाट बयान अधिक है। नागार्जुन जो कहना चाहते हैं सीधे कहते हैं। उनमें सूक्ष्मता और सांकेतिकता कम है। कला की दृष्टि से यह कविता की कमजोरी भी है। पर यह कमजोरी ही नागार्जुन की कविता को अधिक प्रेषणीय बना देती है। उसे दुर्बोध जटिलता से मुक्त कर देती है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि नागार्जुन में कवि-कौशल नहीं है। वस्तुतः व्यंग्य उनकी कविता की सबसे बड़ी शक्ति है। दिल्ली से टिकट लेकर लौटे नेताओं पर एक व्यंग्य देखिए—

स्वेत स्याम रतनार आंखियाँ निहार के
सिण्डीकेटी प्रभुओं की पगधूर झार के

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner